5

एकजुटता का जीवन

(प्रेरितों 2:22-47)

बदला हुआ जीवन स्थानीय कलीसिया में जिया हुआ जीवन है ...।

यरीहो के मार्ग पर
केवल दो लोगों की जगह है
न अधिक और न इससे कम
केवल यीशु और आप के लिए

इस गीत में रोमांचकारी विचार तो है परन्तु यह असंगत भी है। मसीह अपने साथ सहभागिता में सब को बुलाता है। और यह गीत गुमराह करने वाला हो सकता है। मसीह के साथ अपने निजी रिश्ते पर हम इतना ज़ोर दे सकते हैं कि हमें लगने लगे कि हमारे लिए कलीसिया का भाग होने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई पूछ सकता है, ''मैं आराधना में क्यो जाऊं? मेरे लिए बड़ी बात तो मसीह की नज़दीकी में रहना है। मैं नदी के किनारे प्रभु की आराधना वैसे ही कर सकता हूं जैसे चर्च बिल्डिंग में।''

परन्तु नया नियम सिखाता है कि मसीहियत एकांत जीवन के लिए नहीं बनी थी। यह हमारे प्रभु की कलीसिया में एक जुटता का जीवन बनाने के उद्देश्य से बनी थी। यह तथ्य कि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा और योजना का भाग है (इफिसियों 3:10, 11) हमें बताता है कि परमेश्वर ने अपने बच्चों को अपने आप में मसीही बनने की इच्छा नहीं की। उनके लिए उसका उद्देश्य कलीसिया का भाग बनना था और ''कलीसिया'' के लिए यूनानी शब्द का अर्थ सभा, अर्थात मण्डली है जहां वे उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए मिलकर रहने की कोशिश करते होंगे कि अन्य मसीही लोगों के साथ रह सकें। जो कोई यह कहता है कि मसीही होने के लिए कलीसिया की आवश्यकता नहीं है वह परमेश्वर के निर्णय पर सवाल उठाता है!

नये नियम का एक हवाला जो उस एकजुटता को दिखाता है, प्रेरितों 2:22-47 है।

उस एकजुटता का आधार

प्रेरितों 2 अध्याय बताता है कि पवित्र आत्मा किस प्रकार प्रेरितों पर बिल्कुल वैसे उतरा जैसे यीशु ने प्रतिज्ञा की थी। पवित्र आत्मा के भौतिक प्रदर्शनों से लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। परन्तु वहां उपस्थित कुछ लोगों ने ठट्ठा किया। फिर पतरस ने उठकर तर्क दिया कि जो कुछ हो रहा है वह शराब के नशे के कारण नहीं बल्कि नबी की भविष्यवाणी के अनुसार था। परमेश्वर ने आत्मा के इन प्रदर्शन के साथ पवित्र आत्मा को भेजा था। पवित्र आत्मा के भौतिक प्रदर्शनों से लोगों की भीड़ जमा हो गई परन्तु वहां प्रस्तुत कुछ लोगों ने ठट्ठा किया। तब पतरस ने उठकर

तर्क दिया कि जो कुछ हो रहा है वह शराब के नशे में नहीं बल्कि योएल भविष्यवक्ता की कही गई बात का पूरा होना था। परमेश्वर ने आत्मा के इन प्रदर्शनों के साथ पवित्र आत्मा को भेजा था। फिर पतरस प्रचार करने लगा (प्रेरितों 2:22-36)।

पतरस अपने प्रवचन के आरम्भिक शब्दों में अपना विषय ''यीशु नासरी'' बताता है। पतरस कहता है कि यीशु ने परमेश्वर के सामर्थ से आश्चर्यकर्म किए थे (आयत 22); उसे उन लोगों द्वारा मारा डाला गया जो उसकी सुनते थे (आयतें 23, 36); वह भविष्यवाणी की पुस्तकों के अनुसार मरे हुओं में से जी उठा था और प्रेरित लोग उसके जी उठने के ग्वाह थे (आयतें 24-32); और वह प्रभु भी और मसीह भी बनाए जाकर स्वर्ग में ऊंचा गया गया है (आयतें 33-36)।

प्रेरितों 2:37 में दिए गए प्रवचन का परिणाम यह हुआ कि ''सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें?'' स्पष्टतया उन्हें पतरस की बात पर यकीन था कि यीशु जी उठा है, स्वर्ग में उसे महिमा दी गई है और वह प्रभु भी है और मसीह भी।

फिर हम पढ़ते हैं, ''पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। इस कारण जिन लोगों ने यीशु में विश्वास लाया था उन्हें मन फिराने और बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई *थी*। मसीही बनने के लिए व्यक्ति को यीशु में विश्वास लाना, अपने पापों से मन फिराना और पापों की क्षमा *के लिए* बपतिस्मा लेना आवश्यक था।

आगे हम पतरस की बात के लिए भीड़ की प्रतिक्रिया को पढ़ते हैं (प्रेरितों 2:39-41)। ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया।'' हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि जिन्होंने बपतिस्मा लिया उनके साथ प्रतिज्ञा भी पूरी हुई यानी उनके पाप क्षमा हुए और उन्हें पवित्र आत्मा का दान दिया गया! (प्रेरितों 2:38)। परन्तु कुछ और भी हुआ: ''उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए'' (प्रेरितों 2:41)। किन में मिल गए? कलीसिया में! प्रेरितों 2:47 कहता है कि इस समूह में ''प्रभु प्रतिदिन उन्हें मिला रहा था जो उद्धार पा रहे थे।'' KJV में प्रेरितों 2:47 में ''चर्च'' शब्द इस्तेमाल हुआ है। मूल धर्म शास्त्र में ''चर्च'' शब्द नहीं मिलता परन्तु इसका विचार मिलता है। 41 और 47 आयतों में इसी समुह की बात की गई है और यह समूह चर्च या कलीसिया ही है। वास्तव में कलीसिया का आरम्भ इसी दिन हुआ। (देखें प्रेरितों 11:15.)

इस सब का हमारी एकजुटता से क्या सम्बन्ध? बहुत! हम वही यानी मसीही ही बने हैं! हम मसीही वैसे ही बने हैं! हम ने सुनाए गए उसी सुसमाचार को सुना! हम ने उसी बात पर विश्वास किया! हम ने मन फिराने और बपतिस्मा लेने की उन्हीं आज्ञाओं को माना! हमें उसी तरह से, उसी कारण के लिए उसी से जिसे पौलुस ''एक ही बपतिस्मा'' कहता है, बपतिस्मा दिया गया (इफिसियों 4:5) और हम सब को उसी कलीसिया में मिलाया गया था। पौलुस इसे इस प्रकार कहता है: ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, ...'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। बाइबली एकजुटता अर्थात बाइबली एकता का आधार उसी बपतिस्मे को मानकर और उसी

कलीसिया में मिलाए जाकर, उन्हीं बातों पर हमारे विश्वास पर आधारित है! हम उस एकजुटता को तब तक नहीं पा सकते जब तक नये नियम में दिए गए नमूने के अनुसार मसीही नहीं बनते और जब तक हमें उसी एक देह यानी कलीसिया में मिलाया नहीं जाता (कुलुस्सियों 1:18) जिसकी बात नया नियम करता है।

उस एकजुटता की विशेषताएं

प्रेरितों 2 अध्याय उस पहली कलीसिया के जीवन का वर्णन करता है (प्रेरितों 2:42-47) इस वचन का विषय शायद आयत 44 में मिलता है: ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, ...।'' उन में किस बात में एकजुटता थी?

प्रेरितों की शिक्षा में उनके समर्पण में एकजुटता

प्रेरितों 2:42 कहता है कि जिन्हें कलीसिया में मिला लिया गया था ''वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोटने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' प्रेरितों की शिक्षा में समर्पण में क्या शामिल था?

इसमें प्रेरितों के परमेश्वर के वचन को सुनाना शामिल होगा। उन आरम्भिक मसीही लोगों को उन्हें उनके बीच में उन्हें सिखाने के लिए जीवित प्रेरितों को शिक्षा दी थी, प्रेरितों और उनके बीच में होने की आशीष थी (मत्ती 28:18-20)। उनके यीशु के विषय में और जानने की इच्छा से उत्सुक्तापूर्वक, प्रतिदिन प्रेरितों को घेरे रहने की कल्पना करें।

इतना ही काफ़ी नहीं होगा। प्रेरितों की शिक्षा के लिए उनका लगाव उन्हें पवित्र शास्त्र का अध्ययन स्वयं भी करवाता होगा। प्रेरित यही प्रचार करते थे कि यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया है। ये लोग वे यहूदी थे जो पुराने नियम से परिचित थे और जैसा कि बाद में बिरिया के लोगों के जैस थे जिनके विषय में कहा गया, कि वे ''पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते थे कि ये बातें यूं ही हैं या नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। फिर से आप उनके घण्टों पुराने नियम की पत्रियों को फरोलते हुए, लिखी गई बातों को उनकी कहीं बातों से मिलाते हुए देखने की कल्पना कर सकते हैं। और आप उनके आनन्द की कल्पना कर सकते हैं कि उन्हें यह पक्का हो गया कि यीशु वास्तव में प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा ही है!

यह भी काफ़ी नहीं था। अपने आप को प्रेरितों की शिक्षा के लिए समर्पित करने के लिए निश्चित रूप से प्रेरितों की शिक्षा को मानने का उनका निश्चय शामिल था। वे जानते थे कि मसीह प्रेरितों के द्वारा बात कर रहा है यानी प्रेरितों की बातें मसीह की बातों की तरह ही अधिकारात्मक थीं। इसलिए वे प्रेरितों की बातों को केवल सीखने के लिए नहीं बल्कि यह जानने के लिए सुनते थे कि उनका प्रभु उन से क्या चाहता है। फिर वे उसे करते!

लगभग उसी तरह से प्रेरितों की शिक्षा के प्रति कलीसिया में एकजुटता के लिए हमारे समर्पण की आवश्यकता है।

यदि हम उस शिक्षा यानी डॉक्ट्रिन के प्रति समर्पित होना चाहते हैं तो हमें उस को सुनने के लिए उत्सुक होना आवश्यक है जो प्रेरित सिखाते हैं। एक अर्थ में आरम्भिक कलीसिया की तरह ही आज प्रेरित हमारे बीच में रह रहे हैं! वे हमारे बीच में इस अर्थ में हैं कि हमारे पास उनकी

बातें, नये नियम में लिखी गई हैं जो परमेश्वर का जीवित और सदा रहने वाला वचन है (1 पतरस 1:23)। क्या हमें भी आरम्भिक मसीही लोगों की तरह उसी वचन के प्रचार के लिए तन मन से सुनना नहीं चाहिए? क्या हमें उस वचन को सुनने के लिए उपस्थित नहीं रहना चाहिए, चाहे रविवार प्रात: की बाइबल क्लास हो, रविवार प्रात: की आराधना, रविवार सायं की आराधना हो, बुधवार शाम की आराधना, या सुसमाचार सभा?

क्या हम सब को अपनी ओर से पवित्र शास्त्र का अध्ययन नहीं करना चाहिए? अपने आप आपनी बाइबलों का अध्ययन करने में हमें कितना आनन्द आना चाहिए। परमेश्वर के वचन का अध्ययन स्वतन्त्र रूप से करने के लिए अपने आप को देकर हम भटकने से बच सकते हैं और गलत से सही शिक्षा में अन्तर करना सीख सकते हैं।

इसके अलावा यदि हम अपने आपको प्रेरितों की शिक्षा के लिए अपने आपको देते हैं तो हम पूरी कोशिश से प्रेरितों के द्वारा दी गई प्रभु की शिक्षा को मानने की कोशिश करेंगे (याकूब 1:22)।

आराधना में एकजुटता

प्रेरितों 2:42 आराधना की कई बातों की बात करता है: ''प्रेरितों की शिक्षा'' में आराधना में वचन का प्रचार करना होगा। ''रोटी तोड़ना'' सम्भवतया प्रभु भोज को कहा गया। ''प्रार्थना'' आम लोगों के बीच में की जाने वाली प्रार्थनाओं को कहा गया होगा। ''संगति'' का अर्थ आराधना के भाग के रूप में देना होगा। और वहीं आगे आराधना की बात है (आयत 47)। लूका कहता है कि चेले ''परमेश्वर की महिमा'' करने में व्यस्त रहते थे।

मसीही होने के लिए हमें मिलकर आराधना करनी आवश्यक है! इकट्ठे आराधना करते हुए हम प्रभु-भोज में भाग लेते और सप्ताह के पहले दिन अपनी कमाई में से देते, परमेश्वर के वचन को सीखते और उसका अध्ययन करते हैं, हम गाते हैं और प्रार्थना करते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम सप्ताह के पहले दिन कम से कम एक बार इकट्ठा हों। परन्तु हमारे मिलने की बारम्बरता का निर्णय हमारे ऊपर है। लगता है कि यरूशलेम की कलीसिया पहले दिन इकट्ठा होती थी। वचन पाठ कहता है कि वे ''प्रतिदिन'' मन्दिर में इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 2:46)। मैं इसे यह मान लेता हूं कि वे ''मन्दिर में इकट्ठे'' इस अर्थ में होते थे कि वे यहूदियों के रूप में आराधना करने नहीं बल्कि मसीही लोगों के रूप में आराधना करने के लिए मन्दिर के माहौल में इकट्ठा हों। फिर भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनका *इकट्ठा होना* स्पष्टतया प्रतिदिन आराधना और शिक्षा के लिए होता था।

आज हमारे लिए इसका क्या अर्थ है कि कलीसिया सप्ताह के पहले दिन और जब भी लगे कि इकट्ठा होना चाहिए, लगातार आराधना और निर्देश के लिए *इकट्ठी* हो। परन्तु यदि कलीसिया का इकट्ठा होना आवश्यक है तो हर मसीही की जिम्मेदारी है कि जहां तक हो सके, कलीसिया की हर सभा में उपस्थित हो। इब्रानियों की पत्री में इसे इस प्रकार कहा गया है:

> और प्रेम, और भले कामों में उक्साने के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह

किया करो (इब्रानियों 10:24, 25)।

उस कलीसिया से अलग होकर जिसमें मसीही बनने पर प्रभु मिलाता है कोई मसीही नहीं हो सकता। और कोई वास्तव में अपने आपको कलीसिया यानी सभा का भाग नहीं मान सकता जब तक वास्तव में वह कलीसिया के साथ इकट्ठा नहीं होता! आराधना में कलीसिया एक जुटता के अपने सबसे अच्छे पलों में से कुछ का अनुभव करती है जिस कारण हर मसीही को उस एकजुटता का अनुभव करने के लिए उपस्थित होना आवश्यक है।

देखभाल करने या परोपकार में एकजुटता

उन आरम्भिक मसीही लोगों के द्वारा एक दूसरे की सम्भाल का इतिहास प्रभावशाली है। यहां हम पढ़ते हैं: ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों 2:44, 45; 4:32-35 भी देखें)।

नये नियम की शिक्षा के अनुसार, कलीसिया का परोपकार साथी मसीही लोगों की सहायता करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, परन्तु यह कलीसिया की पहली जिम्मेदारी है (गलातियों 6:10)। जब हम एक दूसरे से इतना प्रेम रखें कि हम एक दूसरे की देखभाल करने लगें तो हम अपने आप को मसीह के चेले होना साबित करते हैं (यूहन्ना 13:35)।

किसी सदस्य पर संकट आ जाने पर कलीसिया के उठ खड़ा होने को देखना हमेशा रोमांचकारी रहता है। किसी परिवार में अचानक मृत्यु हो गई है और *कलीसिया वहां है*-कहे जाने से भी पहले, खाना और दोस्तों के साथ तसल्ली देने के लिए। किसी को दुर्घटना में चोट लग जाती है परिवार के लिए प्रार्थना करने, तसल्ली देने, आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए *कलीसिया वहीं है*-लम्बी रात में उनके साथ। कोई सदस्य आप्रेशन के लिए अस्पताल जाता है और *कलीसिया वहां है*-उससे मिलने, घर में से खाना लाने, फूल और कार्ड भेजने, टेलिफोन पर लोगों को बताने के लिए। लोगों का सामान आग में नष्ट हो जाता है, *और कलीसिया वहां है*-तुरन्त पैसे और, फर्नीचर और सामान इकट्ठा करके देने और अस्थाई निवास देने और परिवार को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए ढंग जुटाकर। मसीही लोग किसी दूसरे देश से अमेरिका में बसने के लिए, अपने घर बाहर को छोड़कर आते हैं, *और कलीसिया वहां है*-उन्हें काम ढूंढ़ने और घर खरीदने में सहायता देने, फौरी और दीर्घकालीन सहायता देकर जब तक उनका परिवार नये घर में बस नहीं जाता। मैंने ऐसा होते देखा है! कलीसिया की एकजुटता यही है!

संगति में एकजुटता

वचन कहता है: ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। ... और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे'' (प्रेरितों 2:44, 46)। वे एकजुट थे, केवल ''सामूहिक आराधना'' के लिए मन्दिर के माहौल में नहीं बल्कि ''घर घर रोटी तोड़ने'' में भी। इस आयत में उनका ''रोटी तोड़ना'' आयत 42 में ''रोटी तोटने'' से अलग है। आयत 42 आराधना के संदर्भ का सुझाव देती है और सम्भवतया सहभागिता की बात करती है। आयत

46 संगति के संदर्भ का सुझाव देती है और इसका अर्थ एक दूसरे के घर में उनके इकट्ठा खाने के लिए होना चाहिए। कहने का अर्थ यह है कि वे केवल रविवार को ही नहीं, प्रतिदिन इकट्ठा होते थे; वे अपने घरों में केवल वहीं इकट्ठा नहीं होते थे जहां सामूहिक रूप में मिलते थे; और केवल वे आराधना के लिए ही नहीं बल्कि संगति के लिए भी इकट्ठा होते थे।

यदि नये नियम की कलीसिया की कोई ऐसी विशेषता है जो हम ने छोड़ दी हो, तो वह संगति में एकजुटता है। हमें लगता है कि हम रविवार को आराधना के लिए चर्च बिल्डिंग में इकट्ठा होते हैं, एकजुटता की इसी भावना की हमें आवश्यकता है। परन्तु नये नियम के मसीही प्रतिदिन इकट्ठा होते थे। विशेषकर यह याद रखा जाना चाहिए कि वे इकट्ठे खाते थे। वास्तव में यह इकट्ठे खाना इतना लगातार होता था और मसीहियत के लिए इतना आवश्यक है कि विश्वास त्याग करने वाले मसीही से संगति तोड़ने का अर्थ विशेष रूप से उसके साथ खाना खाने से इनकार करना था (1 कुरिन्थियों 5:11)।

आराधना के लिए लगातार इकट्ठे होने के अलावा ... घरों में इकट्ठे होना ... इकट्ठे खाना ... हमारी एकजुटता का चिह्न और कारण दोनों हैं। निश्चित रूप में हमें नये नियम के इस व्यवहार को बहाल करने का प्रयास करना आवश्यकता है!

व्यवहार में एकजुटता

लूका हमें बताता है कि ''वे आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे'' (प्रेरितों 2:46, 47)। आनन्द और उदारता का उनका व्यवहार वही था। कलीसिया में ऐसा व्यवहार हर सदस्य का होना चाहिए। यदि ऐसा व्यवहार है तो अधिक से अधिक लोग कलीसिया की ओर आकर्षित होंगे। उस समय की तरह आज यदि हम आनन्द और उदारता दिखाते हैं तो कलीसिया से ''सब लोग प्रसन्न'' हो सकते हैं। दूसरी ओर यदि हम अपनी संगति में लोगों को आकर्षित करने के बजाय, झगड़ते और शिकायतें करते रहते हैं तो हम उन्हें भगा देंगे। व्यक्तिगत रूप से हो या सामूहिक रूप से, हमारा व्यवहार दूसरों के मन में हमारे बारे में विचार बनाता है।

उस एकजुटता के परिणाम

प्रेरितों 2:46, 47 देखें। चेलों से ''सब लोग प्रसन्न थे। और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।'' कलीसिया प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी!

कोई शक नहीं कि थोड़ा बहुत कलीसिया के भीतर एकजुटता का कारण यही था। आज की तरह तब भी पुरुष के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं था! इस कारण लोग हमेशा ऐसी जगह ढूंढ़ते थे जहां उन्हें प्रेम मिले और वे दूसरों से प्रेम कर सकें। जब वे कलीसिया में एकजुटता को देखते तो वे इसके सदस्य बनना चाहते। सो कलीसिया के सदस्यों द्वारा मसीह की खुशखबरी फैलाने और सुसमाचार दूसरों को सुनाने से उनके मित्र और पड़ोसी सुसमाचार की बात को मानते, उद्धार पाते और कलीसिया में मिलाए जाते थे। *परन्तु वे कलीसिया की ओर खिंचते और इसके संदेश को पसन्द करने के लिए प्रेरित होते थे क्योंकि वे इसके सदस्यों के बीच पाई जाने वाली एकजुटता को देखते थे।*

आज हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें अधिकतर लोग समाज से कटे हुए हैं। ... जहां उन्हें लगता है कि उनके केवल सिरों की गिनती होती है ... जहां अकेलापन पाया जाता है। ऐसे संसार में लोग उस संगति की ओर खींचे जाते हैं जहां उन्हें वास्तविक एकजुटता मिल सकती है! वे बदल जाएंगे और कलीसिया बढ़ेगी। शायद इस बात का कि कलीसिया इतनी क्यों नहीं बढ़ी कारण यही है कि हम ने संसार को वैसी संगति नहीं दिखाई है जैसी पहली सदी के लोगों ने मसीह की कलीसिया में देखी थी।

सारांश

''एकजुटता'' आज भी हमारे संसार में आदर्श मानी जाती है। परन्तु कलीसिया में यह वास्तविकता है। जब हमारा परमेश्वर हमें अपने साथ एक बनाता है, तो वह हमारे लिए एक दूसरे के साथ एक होना भी सम्भव बना देता है। यूहन्ना इसे इस प्रकार कहता है: परन्तु ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे हम भी ज्योति में चलें, *तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं,*'' (1 यूहन्ना 1:7)। एक दूसरे के साथ असली संगति या एकजुटता केवल यीशु मसीह में और उसके द्वारा और उसकी कलीसिया में ही पाई जाती है।